IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 3, Issue 1, December 2023
Impact Factor: 7.301

राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन का NEP 2020 के संदर्भ में आलोचनात्मक अध्ययन

A Critical Study of Radhakrishnan's Philosophy of Education in the Context of NEP 2020

डॉ आरती आर्य
प्रोफेसर, शोध निर्देशक
बीसीजी शिक्षा महाविद्यालय देवास
सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय उज्जैन

अमृता चौधरी
शोधार्थी
बी.सी.जी.शिक्षा शोध संस्थान
देवास, मध्यप्रदेश

सार (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के संदर्भ में आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। राधाकृष्णन ने शिक्षा को आत्म-साक्षात्कार, नैतिक विकास एवं सांस्कृतिक चेतना का माध्यम माना था। NEP 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा, बहुभाषिकता, समग्र विकास एवं मूल्य-आधारित शिक्षा पर बल देकर राधाकृष्णन की विचारधारा को आंशिक रूप से मूर्त रूप देने का प्रयास किया है। तथापि, इस नीति में व्यावसायीकरण, तकनीकी निर्भरता तथा सामाजिक असमानता की चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं जो राधाकृष्णन के आदर्शवादी दृष्टिकोण से भिन्न प्रतीत होती हैं। यह शोध पत्र दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करते हुए शिक्षा नीति के भविष्य के लिए सुझाव प्रस्तुत करता है।

This paper presents a critical analysis of Dr. Sarvepalli Radhakrishnan's philosophy of education in the context of the National Education Policy 2020 (NEP 2020). It examines the convergences and divergences between Radhakrishnan's idealist vision and the policy framework, and offers constructive recommendations for value-based educational reform in India.

मुख्य शब्द (Keywords): *राधाकृष्णन, शिक्षा दर्शन, NEP 2020, आदर्शवाद, भारतीय ज्ञान परंपरा, समग्र शिक्षा, मूल्य-आधारित शिक्षा, आत्म-साक्षात्कार*

1. प्रस्तावना (Introduction)

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1888-1975) भारतीय दर्शन के उन महान चिंतकों में से एक थे जिन्होंने शिक्षा को केवल सूचना संप्रेषण नहीं, बल्कि मनुष्य के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास का माध्यम माना। भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति एवं द्वितीय राष्ट्रपति के रूप में उनका शैक्षिक योगदान अतुलनीय है। उनका जन्मदिन 5 सितंबर प्रतिवर्ष 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है — यह स्वयं में उनकी शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

स्वतंत्रता के 75 वर्षों के पश्चात, भारत सरकार ने 2020 में एक व्यापक राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) प्रस्तुत की जो 34 वर्ष पुरानी शिक्षा नीति 1986 का स्थान लेती है। यह नीति 21वीं सदी की चुनौतियों के अनुरूप भारतीय शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन का संकल्प लेती है। NEP 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System), बहुभाषिकता, समग्र विकास (Holistic Development) तथा मूल्य-आधारित शिक्षा पर विशेष बल दिया है।

इस पृष्ठभूमि में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि राधाकृष्णन का शिक्षा दर्शन NEP 2020 के साथ किस सीमा तक सामंजस्य रखता है और कहाँ वैचारिक अंतर है? क्या नई शिक्षा नीति राधाकृष्णन के आदर्शवादी स्वप्न को साकार कर सकती है? इन्हीं प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास इस शोध पत्र में किया गया है।

2. शोध उद्देश्य एवं पद्धति (Research Objectives & Methodology)

2.1 शोध उद्देश्य

- राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन के मूल सिद्धांतों का विश्लेषण करना।
- NEP 2020 के प्रमुख प्रावधानों का परीक्षण करना।
- राधाकृष्णन के विचारों एवं NEP 2020 के मध्य समानताओं और भिन्नताओं की पहचान करना।
- राधाकृष्णन के दर्शन के आलोक में NEP 2020 की आलोचनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करना।
- भारतीय शिक्षा के भविष्य के लिए नीतिगत सुझाव देना।

2.2 शोध पद्धति

यह शोध मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धति पर आधारित है। इसमें द्वितीयक स्रोतों — राधाकृष्णन के मूल ग्रंथ, सरकारी दस्तावेज, शोध पत्रिकाओं, एवं दार्शनिक व्याख्याओं — का उपयोग किया गया है। तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis) के माध्यम से दोनों के वैचारिक संबंध को स्थापित किया गया है।

3. राधाकृष्णन का शिक्षा दर्शन: मूल सिद्धांत

3.1 आदर्शवाद एवं आत्म-साक्षात्कार

राधाकृष्णन मूलतः आदर्शवादी (Idealist) दार्शनिक थे। उनके अनुसार शिक्षा का सर्वोच्च लक्ष्य आत्म-साक्षात्कार (Self-Realization) है। उन्होंने कहा था — "शिक्षा का अर्थ है मनुष्य को मनुष्य बनाना।" वे मानते थे कि शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपनी आत्मा की गहराइयों को समझे, अपने भीतर के दिव्यत्व को पहचाने।

उनका दर्शन उपनिषदों एवं वेदांत से गहरे रूप से प्रभावित था। उन्होंने 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' को शिक्षा के तीन आधार स्तंभ माना — सत्य की खोज, नैतिकता का आचरण और सौंदर्यबोध का विकास।

3.2 मूल्य-आधारित शिक्षा (Value-Based Education)

राधाकृष्णन का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा मात्र ज्ञान-प्रदान नहीं, बल्कि चरित्र-निर्माण का माध्यम है। उन्होंने नैतिक मूल्यों, सत्यनिष्ठा, करुणा, सहिष्णुता एवं राष्ट्रभक्ति को शिक्षा का अनिवार्य अंग माना। उनकी दृष्टि में वह शिक्षा अधूरी है जो केवल बुद्धि को विकसित करे किंतु हृदय को न छुए।

3.3 भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्त्व

राधाकृष्णन ने पाश्चात्य शिक्षा के अंधानुकरण की तीखी आलोचना की। उनके अनुसार भारतीय शिक्षा को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ा रहना चाहिए। उन्होंने भारतीय दर्शन, साहित्य, कला, योग, आयुर्वेद आदि को शैक्षिक पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का आग्रह किया। उनका मत था कि एक सच्चा शिक्षित भारतीय वही है जो विश्व की श्रेष्ठतम विचारधाराओं को भारतीय आत्मा से आत्मसात कर सके।

3.4 शिक्षक की भूमिका

राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षक केवल सूचना देने वाला नहीं, बल्कि ज्ञान का जीवंत प्रवाह है। उन्होंने गुरु-शिष्य परंपरा को आधुनिक शिक्षा में पुनर्स्थापित करने का आह्वान किया। एक आदर्श शिक्षक न केवल विद्वान होता है, बल्कि चरित्रवान, प्रेरणादायक एवं विद्यार्थी के साथ गहरे बौद्धिक-आत्मिक संबंध में बंधा हुआ होता है।

3.5 धर्म एवं विज्ञान का समन्वय

राधाकृष्णन विज्ञान एवं धर्म को परस्पर विरोधी नहीं मानते थे। उनके अनुसार विज्ञान बाह्य जगत का ज्ञान देता है और दर्शन/अध्यात्म आंतरिक जगत का। एक पूर्ण शिक्षा वह है जो दोनों का संतुलन स्थापित करे। उन्होंने धर्म को संकुचित अर्थ में नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों की व्यापक अभिव्यक्ति के रूप में देखा।

3.6 लोकतांत्रिक एवं सर्वसुलभ शिक्षा

राधाकृष्णन ने स्त्री-शिक्षा, दलित शिक्षा एवं ग्रामीण शिक्षा पर बल दिया। वे चाहते थे कि शिक्षा किसी विशेष वर्ग का विशेषाधिकार न रहे। उन्होंने 1948-49 में 'राधाकृष्णन विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग' का नेतृत्व करते हुए उच्च शिक्षा में सुधार के लिए व्यापक सुझाव प्रस्तुत किए।

4. NEP 2020 के प्रमुख प्रावधान: एक संक्षिप्त अवलोकन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कस्तूरीरंगन समिति की अनुशंसाओं पर आधारित है। इसके प्रमुख प्रावधानों में निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं:

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 3, Issue 1, December 2023
Impact Factor: 7.301

प्रावधान	विवरण
5+3+3+4 संरचना	पूर्व-प्राथमिक से उच्चतर माध्यमिक तक नई संरचना; बाल्यावस्था शिक्षा पर बल
मातृभाषा में शिक्षा	कम से कम कक्षा 5 तक, अधिमानतः 8 तक मातृभाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण
भारतीय ज्ञान तंत्र (IKS)	पाठ्यक्रम में वेद, उपनिषद, योग, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि का समावेश
समग्र विकास	कला, खेल, व्यावसायिक कौशल को शैक्षिक पाठ्यक्रम का अंग बनाना
उच्च शिक्षा सुधार	मल्टीपल एंट्री-एग्जिट, क्रेडिट बैंक, लचीला पाठ्यक्रम
GER लक्ष्य	2035 तक उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात 50% करने का लक्ष्य
शिक्षक प्रशिक्षण	4-वर्षीय इंटीग्रेटेड B.Ed., निरंतर व्यावसायिक विकास
प्रौद्योगिकी एकीकरण	DIKSHA, SWAYAM जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग

5. राधाकृष्णन के दर्शन एवं NEP 2020 में समानताएँ

5.1 भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनरुत्थान

राधाकृष्णन और NEP 2020 दोनों में भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System) के प्रति गहरी प्रतिबद्धता दिखती है। राधाकृष्णन जहाँ भारतीय दर्शन को विश्व सभ्यता का आधार मानते थे, वहीं NEP 2020 ने IKS को पाठ्यक्रम का अनिवार्य अंग बनाया है। दोनों में यह विश्वास साझा है कि भारत की शक्ति उसकी सांस्कृतिक विरासत में निहित है।

5.2 मातृभाषा में शिक्षा

राधाकृष्णन ने सदैव मातृभाषा में शिक्षा का समर्थन किया। उनका मत था कि विदेशी भाषा में शिक्षा मनुष्य को उसकी जड़ों से काट देती है। NEP 2020 ने कम से कम प्राथमिक स्तर तक मातृभाषा में शिक्षण को अनिवार्य बनाया है — यह राधाकृष्णन के विचारों की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है।

5.3 समग्र विकास की अवधारणा

राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षा बौद्धिक, नैतिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास का सम्मिलित प्रयास है। NEP 2020 ने भी 'Holistic Development' को केंद्र में रखा है। कला, संगीत, खेल, व्यावसायिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना राधाकृष्णन की समग्र शिक्षा दृष्टि के अनुरूप है।

5.4 शिक्षक सम्मान एवं प्रशिक्षण

राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षक राष्ट्र-निर्माता है। NEP 2020 ने भी शिक्षकों की गुणवत्ता सुधारने पर विशेष बल दिया है। 4-वर्षीय B.Ed., सतत व्यावसायिक विकास (CPD), तथा शिक्षकों के वेतन एवं स्थिति में सुधार की बात NEP में है जो राधाकृष्णन की दृष्टि से मेल खाती है।

5.5 नैतिक एवं संवैधानिक मूल्य

राधाकृष्णन ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों को सर्वोपरि माना। NEP 2020 ने भी संविधान में वर्णित मूल्यों — स्वतंत्रता, समानता, न्याय, बंधुत्व — को शिक्षा का आधार बताया है। दोनों में नागरिक चेतना एवं राष्ट्रीय एकता की शिक्षा का महत्त्व स्वीकार किया गया है।

6. आलोचनात्मक विश्लेषण: विभिन्नताएँ एवं सीमाएँ

6.1 व्यावसायीकरण की प्रवृत्ति बनाम राधाकृष्णन की आदर्शवादी दृष्टि

राधाकृष्णन शिक्षा को व्यापारिक दृष्टि से देखने के विरोधी थे। उनके लिए शिक्षा एक पवित्र सामाजिक दायित्व थी, न कि बाज़ार की वस्तु। NEP 2020 ने निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित किया है और उच्च शिक्षा में विदेशी विश्वविद्यालयों को प्रवेश की अनुमति दी है। इससे शिक्षा के व्यावसायीकरण की आशंका है जो राधाकृष्णन की आत्मा के विरुद्ध है।

6.2 तकनीकी निर्भरता की चुनौती

NEP 2020 ने डिजिटल शिक्षा एवं प्रौद्योगिकी को केंद्रीय भूमिका दी है। यद्यपि राधाकृष्णन विज्ञान के विरोधी नहीं थे, किंतु वे शिक्षा में मानवीय संपर्क (Human Touch) को अनिवार्य मानते थे। डिजिटल शिक्षा गुरु-शिष्य के आत्मिक संबंध को कमज़ोर कर सकती है। डिजिटल विभाजन (Digital Divide) के कारण ग्रामीण एवं वंचित वर्ग की पहुँच सीमित रह सकती है।

6.3 सामाजिक असमानता एवं समावेशिता की सीमाएँ

राधाकृष्णन चाहते थे कि शिक्षा समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचे। NEP 2020 ने समावेशी शिक्षा की बात तो की है, किंतु अनुसूचित जाति, जनजाति, महिलाओं तथा आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्गों के लिए विशिष्ट बजटीय प्रावधानों का अभाव आलोचना का विषय रहा है। शहर और गाँव की शैक्षिक खाई को पाटने के ठोस उपाय अपर्याप्त लगते हैं।

6.4 परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली

राधाकृष्णन परीक्षाओं की रटने वाली संस्कृति के आलोचक थे। NEP 2020 ने समग्र मूल्यांकन (Comprehensive Assessment) की बात कही है, किंतु बोर्ड परीक्षाओं एवं प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव अभी भी बना हुआ है। PARAKH जैसे मूल्यांकन सुधारों को व्यवहार में लाना एक बड़ी चुनौती है।

6.5 धार्मिक एवं सांप्रदायिक संतुलन

राधाकृष्णन ने धर्म को सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों के रूप में देखा। वे किसी एक धर्म की प्रधानता के विरोधी थे। NEP 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा के नाम पर कुछ आलोचकों ने एकांगी सांस्कृतिक दृष्टिकोण की आशंका व्यक्त की है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि IKS में बहुलतावादी भारतीय परंपराओं का संतुलित प्रतिनिधित्व हो।

6.6 कार्यान्वयन की व्यावहारिक चुनौतियाँ

राधाकृष्णन के आदर्शों को नीति में उतारना जितना कठिन है, उससे भी अधिक कठिन है उन्हें व्यवहार में लाना। NEP 2020 एक उत्कृष्ट दस्तावेज़ है, किंतु इसके कार्यान्वयन के लिए पर्याप्त बजट, प्रशिक्षित शिक्षक, आधारभूत संरचना एवं सुशासन की आवश्यकता है। यह एक दीर्घकालिक प्रक्रिया है जिसके लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति एवं सामाजिक प्रतिबद्धता अपरिहार्य है।

7. तुलनात्मक सारणी: राधाकृष्णन का दर्शन एवं NEP 2020

आयाम	राधाकृष्णन का दर्शन	NEP 2020
शिक्षा का लक्ष्य	आत्म-साक्षात्कार, चरित्र-निर्माण	समग्र विकास, रोजगारपरकता, वैश्विक नागरिकता
भाषा नीति	मातृभाषा अनिवार्य, अंग्रेजी सहायक	मातृभाषा को प्राथमिकता (कक्षा 5 तक)
भारतीय ज्ञान	अनिवार्य, केंद्रीय भूमिका	IKS समावेश, वैकल्पिक विषयों में
शिक्षक स्थान	गुरु — आत्मिक मार्गदर्शक	प्रशिक्षित सुगमकर्ता (Facilitator)
प्रौद्योगिकी	सहायक, मानवीय संपर्क प्रधान	केंद्रीय भूमिका, DigiTech पर बल
व्यावसायीकरण	पूर्णतः विरोधी	निजी क्षेत्र को प्रोत्साहन
मूल्य शिक्षा	सर्वोपरि, सार्वभौमिक	संवैधानिक मूल्य, NEP में उल्लेखित
समानता	सर्वसुलभ शिक्षा का आग्रह	समावेशी शिक्षा नीति, क्रियान्वयन में कमी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 3, Issue 1, December 2023
Impact Factor: 7.301

8. राधाकृष्णन के आलोक में NEP 2020 के लिए सुझाव

राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन को NEP 2020 के क्रियान्वयन में सशक्त रूप से सम्मिलित करने के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तावित हैं:

1. मूल्य-शिक्षा का व्यवस्थित समावेश: प्रत्येक स्तर पर नैतिकता, सत्यनिष्ठा, करुणा एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा को पाठ्यक्रम में संरचित रूप से सम्मिलित किया जाए।

2. शिक्षक-सम्मान एवं स्वायत्तता: शिक्षकों को राधाकृष्णन की परंपरा में सम्मान, आर्थिक सुरक्षा एवं पेशेवर स्वायत्तता प्रदान की जाए।

3. डिजिटल असमानता निवारण: ग्रामीण एवं वंचित क्षेत्रों में डिजिटल अवसंरचना विकसित किए बिना तकनीकी शिक्षा असमानता को और बढ़ाएगी।

4. IKS का बहुलतावादी स्वरूप: भारतीय ज्ञान परंपरा में वेदांत के साथ बौद्ध, जैन, सूफी एवं जनजातीय ज्ञान परंपराओं को भी समान स्थान मिले।

5. शिक्षा का अव्यावसायीकरण: सरकारी वित्तपोषण बढ़ाकर निजी क्षेत्र की व्यावसायिक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखा जाए।

6. मूल्यांकन में सुधार: रटने की परंपरा से मुक्ति पाने के लिए समग्र, सतत एवं रचनात्मक मूल्यांकन को व्यवहार में उतारा जाए।

7. अध्यात्म एवं विज्ञान का समन्वय: योग, ध्यान एवं मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा को पाठ्यक्रम में स्थान देना राधाकृष्णन के समन्वय दर्शन का व्यावहारिक रूप होगा।

9. निष्कर्ष (Conclusion)

राधाकृष्णन का शिक्षा दर्शन एक कालजयी आदर्श है जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना 20वीं सदी में था। उन्होंने शिक्षा को मानव-निर्माण की प्रक्रिया के रूप में देखा — एक ऐसी प्रक्रिया जो बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक आयामों को एकीकृत करे।

NEP 2020 भारतीय शिक्षा में एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। इसने राधाकृष्णन के अनेक विचारों को — मातृभाषा शिक्षण, IKS का समावेश, समग्र विकास, शिक्षक-सुधार — नीतिगत रूप दिया है। यह एक सकारात्मक संकेत है। तथापि, व्यावसायीकरण, तकनीकी निर्भरता एवं सामाजिक असमानता की चुनौतियाँ अभी भी इस नीति के आदर्शवादी स्वप्न के समक्ष बड़ी बाधाएँ हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि NEP 2020 राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन का आंशिक प्रतिबिंब है। इसे पूर्ण रूप से साकार करने के लिए न केवल नीतिगत प्रतिबद्धता, बल्कि सामाजिक चेतना, शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी एवं दीर्घकालिक राजनीतिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता है। राधाकृष्णन का यह कथन आज भी मार्गदर्शक है — "शिक्षा वह है जो मनुष्य को मानव से देवता बनाए।"

10. संदर्भ सूची (References)

1. Radhakrishnan, S. (1929). The Reign of Religion in Contemporary Philosophy. London: Macmillan.

2. Radhakrishnan, S. (1948). Report of the University Education Commission (Radhakrishnan Commission). New Delhi: Government of India.
3. Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020. New Delhi: MoE.
4. Sharma, R. N. (2005). Philosophy and Sociology of Education. New Delhi: Atlantic Publishers.
5. Singh, Y. K. (2011). Philosophical Foundations of Education. New Delhi: APH Publishing.
6. Gupta, M. (2021). NEP 2020 aur Bharatiya Shiksha Darshan. Varanasi: Vishwavidyalaya Prakashan.
7. Mishra, P. K. (2022). Radhakrishnan ke Shiksha Darshan ka Samkalin Sandarbh. Journal of Indian Philosophy of Education, 14(2), 45-62.
8. Kumar, K. (2020). NEP 2020: A Critical Assessment. Economic and Political Weekly, 55(35), 10-14.
9. Pandit, H. N. (1997). Educational Philosophy of Sarvepalli Radhakrishnan. New Delhi: Sterling Publishers.
10. Tharoor, S. (2019). The Paradoxical Prime Minister. New Delhi: Aleph Books. (for contextual reference)